अगस्त 2019

सामान्य ज्ञान दर्पण

वर्ष 33 प्रथम अंक

इस अंक में...

5 सम्पादकीय

विशेष स्तम्भ

7 समसामयिक सामान्य ज्ञान

12 आर्थिक परिदृश्य

19 राष्ट्रीय परिदृश्य

26 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

30 क्रीड़ा जगत्

33 विज्ञान समाचार

34 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

35 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं

36 सारभूत तत्व कोष

लेख

39 रोजगारपरक लेख—नैनो-टेक्नोलॉजी में कॅरियर

40 वैज्ञानिक लेख—वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद् : उपलब्धियों भरा वर्ष

41 गणितीय लेख—विभाज्यता का महासूत्र

44 संविधान-अधिकार सम्बन्धी लेख—लोकपाल

हल प्रश्न-पत्र

45 एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी लेवल (10+2) परीक्षा, 2018

53 एस.एस.सी. मल्टी टॉस्किंग (गैर-तकनीकी स्टाफ) परीक्षा, 2017

60 उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग विधान भवन रक्षक/वनरक्षक (सामान्य चयन) प्रतियोगिता परीक्षा, 2016

71 राजस्थान प्रयोगशाला सहायक सीधी भर्ती परीक्षा, 2018

79 रेलवे रिक्रूटमेण्ट बोर्ड लेवल–1 ग्रुप 'डी' कम्प्यूटर आधारित परीक्षा, 2018

राजस्थान पुलिस सब-इंस्पेक्टर/प्लाटून कमाण्डर भर्ती परीक्षा, 2016

86 प्रथम प्रश्न-पत्र

90 द्वितीय प्रश्न-पत्र

96 हरियाणा पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा, 2018

101 हरियाणा पुलिस कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा (जनरल ड्यूटी), 2018

107 कोर्स ऑन कम्प्यूटर कॉन्सेप्ट्स-वस्तुनिष्ठ प्रश्न

110 आगामी उत्तराखण्ड समूह 'ग' भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

115 ज्ञान वृद्धि कीजिए

116 रोजगार समाचार

119 वार्षिकी : अगस्त 2018—जुलाई 2019 अंक तक

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **-सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्पादकीय

यह भी सफलता का रहस्य है

''वही सफल होता है, जिसका काम उसे निरन्तर आनन्द प्रदान करता है.''

– थोरो

कोई वस्तु हमें सुन्दर क्यों लगती है, क्योंकि उसको देखकर हम थोड़ी देर के लिए अपनी सुधि भूल जाते हैं. व्यक्ति के सुन्दर लगने पर भी हम अपने को भूल जाते हैं–वह व्यक्ति ही कालान्तर में उसका व्यक्तित्व ही हमारे सामने रह जाता है. जितनी अधिक देर तक हमें अपनी सुधि-बुधि नहीं रहती है, आलम्बन अथवा उपस्थित वस्तु अथवा व्यक्ति उतना ही सुन्दर माना जाता है. दूसरे शब्दों में तदाकार परिणति ही सौन्दर्यानुभूति का लक्षण है. वही सौन्दर्य सार्थक है, जो द्रष्टा को तदाकार कर दे, जब कोई चित्रकार किसी वस्तु या व्यक्ति का चित्र बनाता है, तो तदाकार होकर ही वह सुन्दर एवं स्वाभाविक चित्र बना सकता है. सूर्यास्त के दृश्य को देखकर जब कोई चित्रकार स्वयं सूर्यास्त स्वरूप अनुभव करने लगता है, तभी वह सूर्यास्त का सफल चित्रकार बनता है. सफल चित्रकार होने के लिए चित्रित वस्तु के साथ एकाकारता कितनी आवश्यक है ? इस सम्बन्ध में बहुत ही रोचक घटना की चर्चा की जाती है. एक चित्रकार ने मुर्गे का चित्र बनाया. चित्र देखने में बहुत सुन्दर था–चित्र का मुर्गा हूबहू वास्तविक मुर्गा लग रहा था. उस चित्र को लेकर वह राजा के पास पहुँचा और राजा को दिखाकर उसने पारितोषक की इच्छा प्रकट की. चित्रकार को यथेष्ट पुरस्कार देने के लिए राजा ने मंत्री को आज्ञा दी. मंत्री स्वयं एक श्रेष्ठ चित्रकार था. उसने उस चित्र के सामने कई मुर्गे निकाले. उनमें से किसी ने भी उस चित्र में चोंच नहीं मारी अथवा अन्य किसी प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की. मंत्री ने चित्र को अपूर्ण घोषित कर दिया, क्योंकि मुर्गों का यह स्वभाव होता है कि मुर्गा किसी अन्य मुर्गे को देखकर उस पर झपटता है और दो-दो चोंचें करता है.

राजा ने मुर्गे का वांछित चित्र बनाने के लिए एक प्रतियोगिता का आयोजन किया. पूरे राज्य के चित्रकार उपस्थित हुए. उन्होंने एक-से-एक बढ़कर मुर्गों के सुन्दर चित्र बनाए, परन्तु मंत्री की उक्त कटौती पर एक भी चित्रकार खरा नहीं उतर सका. राजा को मंत्री पर क्रोध आ गया. तुम इतने चित्रकारों का अपमान कर रहे हो, जबकि इनमें अनेक चित्र पुरस्कृत करने योग्य हैं. राजा ने मंत्री से कहा–अच्छा, अपनी कसौटी पर खरा उतरने वाला चित्र बनाकर आप ही दिखाइए. मंत्री ने कहा ''बहुत अच्छा सरकार, इसके लिए मुझे छः माह का अवकाश चाहिए.'' राजा से छः माह की छुट्टी लेकर मंत्री चला गया.

●●●